रात्रि क्लास 16/1/69 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

भिन्न–2 अवस्थाओं वाले बच्चे हैं। सभी पुरूषार्थ करते रहते हैं। कोई भूल भी होती है तो पुरूषार्थ कर अभूल बनना है। माया तो सभी से भूलें कराती है। बाप ने समझाया है वॉक्सिंग है। कोई समय तो ऐसी चोट लगती है जो गिरा देती है। बाबा क्या करेंगे? सावधानी देंगे। ऐसे करने से कमाई चट हो गई। 5माल से गिरे। लिखते हैं बाबा ऐसी फिर भूल कभी नहीं होगी, अभी क्षमा करो। बाबा क्या क्षमा करेंगे? बाप कहते है पुरूषार्थ करो तो अच्छा हो जावेंगे। बाकी क्षमा आदि की बात नहीं। बाप जानते हैं माया प्रबल है। बहुतों को हरावेगी। ऐसे नहीं भूल की तो बस हमेशा के लिये वह दाग हो गया। वह ही गाते रहेंगे। किसकी भूल नहीं गानी चाहिए। टीचर का काम है किसकी भूल है तो उनको शिक्षा दें, अभूल बनाना। कई हैं जो भूल एक–दो की एक–दो बताते रहते हैं। फलाना ऐसा है, यह ऐसा है। ढिंढोरा पीटते रहते हैं। यही उन्हों का जैसे धंधा हो जाता है। समझते नहीं हैं बाप अविनाशी वैद्य है, दवाई करेंगे। हमारा काम है उनको बताना, वह आपे ही ठीक करेंगे। छोड़ थौड़े ही देंगे। सारा दिन भूल गाते रहेंगे क्या? ऐसे2 कोई होते हैं किसके साथ न बनी तो ग्लानि करने का धंधा करते रहेंगे। बाप कहते हैं सुधारना मेरे हाथ में है। तुम क्यों अपने हाथ में लॉ उठाते हो। जिसमें क्रोध का अंश होता है वह ग्लानी करते रहेंगे। बाप के ऊपर है ना। तुम सुधारने वाले थोड़े ही हो। अपने हाथ में लॉ उठाकर ग्लानी करते रहेंगे। ऐसे2 हैं जिनमें क्रोध का अंश है। इसलिये बाप समझाते हैं यह भी भूत है। बेसमझाई है। अच्छा, बाबा को रिर्पोट करो ऐसा2 है। तो वह बाप पर रहा। खुद बैठ ग्लानी करते, तो लॉ हाथ में उठाया। इससे सुधरेंगे थोड़े ही। अनबणत हो जावेगी। सभी बच्चों के लिए बाप बैठा है। किसकी ग्लानी करना गोया तुम अपने हाथ में लॉ उठाते हो। तुम अपने हाथ में लॉ नहीं उठाओ। कुछ भी है बाप को बता दो। बहुत बच्चे हैं अपना क्रोध जहाँ–तहाँ ...कते रहते हैं। ऐसे नहीं समझते हैं मैं क्यों कहूँ। बाप को सुनाऊँ तो बाप सुधारेंगे। लॉ अपने हाथ उठाकर ग्लानी करना यह बड़ी भारी भूल है। बाबा आपे ही प्यार से सुधारेंगे। ग्लानी करने से सुधार थोड़े ही होगा। एक/दो को सुधारना है। कोई न कोई खराबी तो सभी में होती है। सभी सम्पूर्ण तो नहीं बने हैं। कोई में क्या अवगुण, कोई (में) क्या अवगुण हैं। वह निकालने का कॉनट्रेक्ट तो बाप ने उठाया है। तुम्हारा काम नहीं। एक/दो देख जैसे टबक पड़ते हैं। क्रोध की प्रवेशता हो जाती हैं। बाप समझाते हैं बच्चों को। बच्चों में जो खामियां सुनते हैं तो फिर .... निकालने के लिए समझानी दी जाती है। बाकी लड़ाई–झगड़ा आदि करना, क्रोध से किसको बताना, फलाना ऐसा है, फलाना ऐसा हैं। बस यही धंधा। इससे मन की शान्ति नहीं होगी। खुद भी अशान्त रहा, औरो ंको भी अशांत किया। अहंकार आ जाता है। अभी तक होशियार कोई है नहीं। सभी श्रीमत पर सुधर रहे हैं। कुछ भी बात है बाबा को (सु)नाओं। बाबा इनकी क्रिमिनल आई है, इनका यह स्वभाव है। बाबा मुरली में समझाय देंगे। सभी में कुछ न कुछ ...ह आदतें हैं। इसमें बच्चों को क्रोध न आना चाहिए। अपनी अवस्था को ही खराब करते हैं। यह भी ड्रामा में (को)ई–2 बच्चों का पार्ट चलता है। सम्पूर्ण तो अन्त में बनना हैं। तो जो भी मनुष्य मात्र हैं उनमें कुछ न कुछ .... मियां हैं इस बाबा सहित। सभी पुरूषार्थी हैं। बाबा को लिखते हैं। बाबा अडोल रहते हैं। शिक्षा देते रहते हैं। (शि)क्षा देना बाप का काम है। फिर उस शिक्षा पर चले न चले वह हुई उसकी तकदीर। कितना पद कम होता है .....त पर न चलने कारण। कुछ भी ऐसा करेंगे तो पद भ्रष्ट। दिल अन्दर खावेगी, मैंने यह भूल की। हमको बहुत (मेह)नत करनी पड़गी। किसका भी अवगुण बाप को सुनाना है। बाप को याद नहीं करते हैं, दरदर यहीं भूले सुनाते हैं अव्यभिचारी बनना चाहिए। एक को सुनाना चाहिए। तो जल्दी सुधर जावेंगे। सुधारने वाला एक बाप ही .... बाकी सभी हैं अनसुधरे; परंतु माया है माया(माथा) ही फेर देती है। कितने सेन्टर्स में बच्चियां हैं। बाप आये हैं सुधार ....., मनुष्य से देवता बनाने। दरदर किसका नाम बदनाम करना वह भी बेकायदे है। तुम शिवबाबा को याद ..... जजमेंन्ट भी उनकी ऊपर होती है। कर्मो का फल बाप देते हैं। भल ड्रामा में परन्तु किसका नाम तो नहीं लिया .... है ना। बाप तो समझाते रहते हैं मेहमान आवें तो उनकी खातरी करनी है। मेहमान जिसके पास आते हैं। ..... खुश होते हैं। भाग्यशाली समझते हैं। तुम कितने महान भाग्यशाली हो। कितने मेहमान आते हैं। टीचर की बुद्धि में .... बच्चों इन जैसा सर्वगुण सम्पन्न बनाऊँ। बाप ने कॉन्ट्रेक्ट उठाया है ड्रामा के प्लैनअनुसार। अच्छा, गुडनाइट।